ISSN 0973-8541, HUMANITIES AND DEVELOPMENT, VOL.21, No.3, July to Sept., 2026/352

Website :https://humanitiesdevelopment.com Impact factor 7.375

मंजुल भगत के कथा–साहित्य में स्त्री जीवन और सामाजिक यथार्थ : एक अध्ययन

परेश कुमार पाण्डेय एवं रविनन्दिनी त्रिपाठी

https://doi.org/10.61410/had.v21i3.361

सारांश

हिंदी कथा–साहित्य में मंजुल भगत का रचनात्मक योगदान सामाजिक जीवन की उन परतों को अभिव्यक्त करने के कारण महत्त्वपूर्ण है, जिनमें स्त्री, परिवार, आर्थिक विषमता, सामाजिक असमानता तथा मानवीय संबंधों की जटिलताएँ दिखाई देती हैं। उनके कथा–साहित्य में स्त्री केवल पारिवारिक व्यवस्था का एक अंग बनकर उपस्थित नहीं होती, बल्कि वह सामाजिक परिस्थितियों से संघर्ष करने वाली संवेदनशील और अनुभवशील मनुष्य के रूप में सामने आती है। मंजुल भगत की कथा–दृष्टि में स्त्री जीवन के अनेक पक्ष आर्थिक निर्भरता, पारिवारिक दायित्व, सामाजिक अपेक्षाएँ, भावनात्मक उपेक्षा, वर्गीय विषमता, श्रम, आत्मसम्मान तथा स्वतंत्र अस्तित्व की आकांक्षा परस्पर जुड़े हुए दिखाई देते हैं। उनके यहाँ स्त्री की समस्या को केवल पुरुष–स्त्री संबंधों के सीमित दायरे में नहीं समझा जा सकता है, इसके पीछे परिवार, अर्थव्यवस्था, सामाजिक संरचना और बदलती जीवन–स्थितियों की भी महत्त्वपूर्ण भूमिका है।

प्रस्तुत शोध–पत्र में मंजुल भगत के कथा–साहित्य में स्त्री जीवन के विभिन्न रूपों तथा उनसे जुड़े सामाजिक यथार्थ का अध्ययन किया गया है। इसमें यह देखने का प्रयास किया गया है कि लेखिका किस प्रकार स्त्री के व्यक्तिगत अनुभवों को व्यापक सामाजिक संदर्भ से जोड़ती हैं। उनके पात्रों के माध्यम से स्त्री की पीड़ा के साथ–साथ उसकी जिजीविषा, प्रतिरोध और आत्मसम्मान की चेतना भी सामने आती है। इस दृष्टि से मंजुल भगत का कथा–साहित्य समकालीन समाज में स्त्री की बदलती स्थिति को समझने का उपयोगी आधार प्रदान करता है।

बीज शब्द– कथा–साहित्य, स्त्री जीवन, सामाजिक यथार्थ, नारी चेतना, मध्यवर्ग, परिवार, सामाजिक विषमता, निर्णयात्मक प्रश्न, एकरेखीय समाधान।

प्रस्तावना

हिंदी साहित्य का विकास भारतीय समाज के परिवर्तनशील स्वरूप के साथ निरंतर जुड़ा रहा है। साहित्यकार अपने समय की सामाजिक परिस्थितियों, मानवीय संबंधों, आर्थिक संरचनाओं और सांस्कृतिक मूल्यों को अपनी रचनात्मक दृष्टि से अभिव्यक्त करता है। कथा–साहित्य इस दृष्टि से विशेष महत्त्व रखता है, क्योंकि कहानी और उपन्यास के माध्यम से व्यक्ति तथा समाज के बीच के संबंधों को अधिक व्यापकता के साथ प्रस्तुत किया जा सकता है। आधुनिक हिंदी कथा–साहित्य में स्त्री जीवन का चित्रण भी इसी सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा है।[1]

- **शोध निर्देशक– हिन्दी विभाग, का0सु0 साकेत पी0जी0, अयोध्या।**
- **शोधार्थिनी–डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या।**

स्वतंत्रता के बाद भारतीय समाज में शिक्षा, नगरीकरण, आर्थिक परिवर्तन और लोकतांत्रिक चेतना के विस्तार ने स्त्री के जीवन को भी प्रभावित किया। स्त्री की पारंपरिक भूमिकाओं में परिवर्तन आया, किंतु सामाजिक संरचना में मौजूद अनेक असमानताएँ पूरी तरह समाप्त नहीं हुईं। परिणामतः आधुनिक स्त्री का जीवन परंपरा और परिवर्तन, दायित्व और स्वतंत्रता, परिवार और व्यक्तित्व तथा सामाजिक अपेक्षा और निजी आकांक्षा के बीच संतुलन स्थापित करने की प्रक्रिया बन गया।

इसी परंपरा में मंजुल भगत का कथा–साहित्य उल्लेखनीय है। उनकी रचनाओं में सामान्य जीवन की छोटी–बड़ी घटनाओं के माध्यम से व्यापक सामाजिक स्थितियों को पहचानने का अवसर मिलता है। उनके कथा–पात्र किसी अमूर्त सामाजिक सिद्धांत के प्रतिनिधि मात्र नहीं हैं, बल्कि अपने परिवेश में जीने वाले मनुष्य हैं। उनके अनुभवों में परिवार, आर्थिक स्थिति, सामाजिक प्रतिष्ठा, संबंधों की जटिलता और मानवीय संवेदना का पारस्परिक संबंध दिखाई देता है।

मंजुल भगत के स्त्री पात्रों को समझने के लिए यह आवश्यक है कि उन्हें केवल पीड़ित स्त्री के रूप में न देखा जाए। उनके पात्रों में परिस्थितियों को सहने की विवशता के साथ–साथ अपनी स्थिति को समझने और उसके प्रति प्रतिक्रिया व्यक्त करने की क्षमता भी दिखाई देती है। यही पक्ष उनके कथा–साहित्य को सामाजिक यथार्थ के अध्ययन के लिए महत्त्वपूर्ण बनाता है।

सामाजिक यथार्थ : अवधारणा और साहित्यिक संदर्भ

'सामाजिक यथार्थ' से आशय समाज में विद्यमान वास्तविक जीवन–स्थितियों, संबंधों, संघर्षों, असमानताओं और व्यवहारगत प्रवृत्तियों के कलात्मक चित्रण से है। साहित्य में यथार्थ का अर्थ केवल घटनाओं की हू–ब–हू पुनरावृत्ति नहीं है। रचनाकार अपने अनुभव, संवेदना और कल्पनाशीलता के माध्यम से सामाजिक जीवन के भीतर सक्रिय अंतर्विरोधों को पहचानता और अभिव्यक्त करता है।[2]

कथा–साहित्य में सामाजिक यथार्थ व्यक्ति और उसके परिवेश के संबंधों के माध्यम से प्रकट होता है। परिवार, वर्ग, आर्थिक स्थिति, शिक्षा, लिंग, सामाजिक प्रतिष्ठा और सांस्कृतिक मूल्य व्यक्ति के जीवन को प्रभावित करते हैं। इसलिए स्त्री के जीवन का यथार्थ भी समाज की व्यापक संरचना से अलग नहीं किया जा सकता।

मंजुल भगत के कथा–साहित्य में सामाजिक यथार्थ का स्वरूप इसी व्यापक अर्थ में दिखाई देता है। उनके यहाँ घरेलू जीवन की परिस्थितियाँ सामाजिक व्यवस्था की ओर संकेत करती हैं। परिवार के भीतर होने वाले निर्णय, स्त्री के श्रम का मूल्यांकन, आर्थिक निर्भरता, सामाजिक मर्यादा और संबंधों में असमानता आदि प्रसंग व्यक्ति के निजी जीवन से आगे बढ़कर सामाजिक प्रश्न बन जाते हैं।

मंजुल भगत का कथा–साहित्य और स्त्री जीवन

मंजुल भगत के कथा–साहित्य में स्त्री जीवन बहुआयामी रूप में सामने आता है। उनके स्त्री पात्र केवल पत्नी, माँ, बहू या बेटी की निर्धारित भूमिकाओं तक सीमित नहीं हैं। उनके भीतर अपनी इच्छाएँ, संवेदनाएँ, असंतोष, आकांक्षाएँ और आत्मसम्मान की भावना भी मौजूद है।[3]

लेखिका स्त्री जीवन की उन परिस्थितियों को रेखांकित करती हैं जहाँ सामाजिक संरचना स्त्री के व्यवहार के लिए अनेक नियम निर्धारित करती है। स्त्री से त्याग, सहनशीलता, पारिवारिक जिम्मेदारी

और सामाजिक प्रतिष्ठा बनाए रखने की अपेक्षा की जाती है। दूसरी ओर, उसकी व्यक्तिगत इच्छाओं और भावनात्मक आवश्यकताओं को कई बार गौण समझ लिया जाता है। यह विरोधाभास उनके कथा–साहित्य में स्त्री जीवन के यथार्थ को निर्मित करता है।

मंजुल भगत की विशेषता यह है कि वे स्त्री को केवल करुणा का पात्र बनाकर प्रस्तुत नहीं करतीं। उनके पात्रों में जीवन की कठिन परिस्थितियों के बीच स्वयं को बनाए रखने की क्षमता दिखाई देती है। कहीं उनका संघर्ष प्रत्यक्ष है, तो कहीं वह मौन असहमति, आत्मसम्मान या अपने अस्तित्व के प्रति जागरूकता के रूप में व्यक्त होता है।

परिवार और स्त्री की स्थिति

भारतीय सामाजिक व्यवस्था में परिवार स्त्री के जीवन का अत्यंत महत्त्वपूर्ण संस्थान है। परिवार स्त्री को सुरक्षा और संबंधों का आधार प्रदान करता है, किंतु उसी के भीतर अनेक सामाजिक अपेक्षाएँ भी निर्मित होती हैं। मंजुल भगत के कथा–साहित्य में परिवार इसी द्वैध स्वरूप के साथ दिखाई देता है।[4]

स्त्री से परिवार को बनाए रखने की जिम्मेदारी की अपेक्षा की जाती है। घरेलू श्रम, बच्चों की देखभाल, पति और अन्य सदस्यों की आवश्यकताओं की पूर्ति तथा सामाजिक संबंधों को बनाए रखना उसके जीवन का हिस्सा बन जाते हैं। इन कार्यों को अक्सर कर्तव्य के रूप में देखा जाता है, जबकि इनके पीछे लगने वाले समय, श्रम और मानसिक ऊर्जा को पर्याप्त सामाजिक मान्यता नहीं मिलती।

लेखिका के कथा–संसार में पारिवारिक संबंधों के भीतर प्रेम और दायित्व के साथ तनाव भी मौजूद है। स्त्री परिवार के लिए त्याग करती है, लेकिन कई बार उसकी इच्छाएँ उसी परिवार की प्राथमिकताओं में पीछे चली जाती हैं। इस प्रकार परिवार स्त्री के लिए एक ओर भावनात्मक आधार है, तो दूसरी ओर सामाजिक नियंत्रण का माध्यम भी बन सकता है।

आर्थिक यथार्थ और स्त्री

स्त्री जीवन के सामाजिक यथार्थ को समझने में आर्थिक स्थिति की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। आर्थिक निर्भरता व्यक्ति की निर्णय क्षमता को प्रभावित करती है और स्त्री के संदर्भ में इसका प्रभाव अधिक जटिल हो सकता है। मंजुल भगत के कथा–साहित्य में आर्थिक परिस्थितियाँ स्त्री की सामाजिक स्थिति से जुड़ी हुई दिखाई देती हैं।[5]

आर्थिक रूप से निर्भर स्त्री को अनेक बार अपने जीवन से जुड़े निर्णयों में दूसरों पर निर्भर रहना पड़ता है। वहीं कामकाजी स्त्री के सामने दोहरी जिम्मेदारी का प्रश्न उपस्थित होता है। वह आर्थिक योगदान देती है, किंतु घरेलू दायित्वों से पूरी तरह मुक्त नहीं होती। इस स्थिति से उत्पन्न तनाव स्त्री जीवन के आधुनिक यथार्थ का महत्त्वपूर्ण पक्ष है।

लेखिका आर्थिक समस्या को केवल धन के अभाव के रूप में नहीं देखतीं। आर्थिक स्थिति सामाजिक प्रतिष्ठा, पारिवारिक संबंधों और आत्मनिर्भरता से भी जुड़ती है। इसीलिए उनके कथा–साहित्य में आर्थिक यथार्थ स्त्री की सामाजिक पहचान को प्रभावित करने वाली व्यापक परिस्थिति के रूप में सामने आता है।

मध्यवर्गीय स्त्री का जीवन

मध्यवर्ग आधुनिक हिंदी कथा–साहित्य का एक महत्त्वपूर्ण सामाजिक आधार रहा है। इस वर्ग में परंपरागत मूल्यों और आधुनिक आकांक्षाओं का विशेष प्रकार का द्वंद्व दिखाई देता है। मंजुल भगत के कथा–साहित्य में भी मध्यवर्गीय जीवन की जटिलताओं का प्रभाव स्त्री पात्रों पर देखा जा सकता है।

मध्यवर्गीय परिवारों में शिक्षा, प्रतिष्ठा, सामाजिक मर्यादा और आर्थिक सीमाओं का विशेष महत्त्व होता है। स्त्री की व्यक्तिगत आकांक्षाओं का मूल्यांकन भी अक्सर इन्हीं मानकों के आधार पर किया जाता है। वह शिक्षा प्राप्त करती है, अपने व्यक्तित्व का विकास करना चाहती है और जीवन में आत्मनिर्भरता की आकांक्षा रखती है, लेकिन परिवार तथा समाज की अपेक्षाएँ उसके निर्णयों को प्रभावित करती रहती हैं।

मंजुल भगत के कथा–साहित्य में यह द्वंद्व स्त्री की मानसिक और सामाजिक स्थिति को समझने में सहायता करता है। आधुनिकता स्त्री को नए अवसर देती है, लेकिन उसके साथ सामाजिक अपेक्षाएँ समाप्त नहीं होतीं। इसीलिए आधुनिक स्त्री का जीवन परिवर्तन और निरंतरता के बीच विकसित होता हुआ दिखाई देता है।

स्त्री श्रम और उसकी सामाजिक मान्यता

स्त्री के श्रम का प्रश्न सामाजिक यथार्थ से गहराई से जुड़ा है। घरेलू कार्य प्रायः आर्थिक गतिविधि के रूप में दर्ज नहीं होते, जबकि परिवार की संरचना इनके बिना संभव नहीं है। मंजुल भगत के कथा–साहित्य में स्त्री का दैनिक जीवन उसके श्रम और जिम्मेदारियों के संदर्भ में समझा जा सकता है।

घर की व्यवस्था बनाए रखना, बच्चों की देखभाल करना, बुजुर्गों की सेवा करना और पारिवारिक संबंधों को संभालना ऐसे कार्य हैं जिनका प्रत्यक्ष आर्थिक मूल्य निर्धारित करना कठिन है। इसके बावजूद इन कार्यों का सामाजिक महत्त्व अत्यधिक है। स्त्री की भूमिका का यही अदृश्य पक्ष उसके जीवन के यथार्थ को अधिक जटिल बनाता है।

कामकाजी स्त्री के संदर्भ में यह स्थिति और अधिक जटिल हो जाती है। रोजगार या व्यवसाय के माध्यम से वह आर्थिक भूमिका निभाती है, लेकिन घर की जिम्मेदारियाँ उसके हिस्से से पूरी तरह समाप्त नहीं होतीं। इस प्रकार स्त्री श्रम का प्रश्न व्यक्तिगत समस्या न रहकर सामाजिक संरचना का प्रश्न बन जाता है।

स्त्री की भावनात्मक दुनिया

स्त्री जीवन का यथार्थ केवल आर्थिक और सामाजिक समस्याओं से निर्मित नहीं होता। उसकी भावनात्मक आवश्यकताएँ भी उसके व्यक्तित्व का महत्त्वपूर्ण हिस्सा हैं। मंजुल भगत के कथा–साहित्य में स्त्री की भावनात्मक दुनिया को संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत किया गया है।

प्रेम, स्नेह, सम्मान, अपनापन और संवाद की आवश्यकता प्रत्येक मनुष्य के लिए महत्त्वपूर्ण है। किंतु सामाजिक भूमिकाओं में बँधी स्त्री की भावनाओं को कई बार परिवार की प्राथमिकताओं के नीचे दबा दिया जाता है। वह अपने दुख को व्यक्त न करके भी संबंधों को बनाए रखने का प्रयास करती है।

मंजुल भगत की कथा–दृष्टि स्त्री के इस मौन पक्ष को समझने की कोशिश करती है। उनके पात्रों की संवेदनाएँ कई बार सीधे संवाद के बजाय व्यवहार, मौन, प्रतिक्रिया और परिस्थितियों के माध्यम से सामने आती हैं। इससे स्त्री जीवन की आंतरिक जटिलता को समझने का अवसर मिलता है।

स्त्री अस्मिता और आत्मसम्मान

आधुनिक स्त्री विमर्श में अस्मिता का प्रश्न केंद्रीय है। अस्मिता का अर्थ केवल स्वतंत्र निर्णय लेने की क्षमता नहीं, बल्कि स्वयं को एक स्वतंत्र मनुष्य के रूप में स्वीकार करना भी है। मंजुल भगत के कथा–साहित्य में स्त्री की अस्मिता का प्रश्न उसके पारिवारिक और सामाजिक संबंधों के साथ जुड़कर उभरता है।[6]

उनकी स्त्री पात्र परिस्थितियों से समझौता करती हुई दिखाई दे सकती हैं, लेकिन इसका अर्थ यह नहीं कि उनके भीतर आत्मसम्मान की चेतना समाप्त हो जाती है। कई प्रसंगों में उनकी प्रतिक्रिया यह संकेत देती है कि वे अपने अस्तित्व को केवल किसी अन्य संबंध की पहचान तक सीमित नहीं मानतीं।

स्त्री अस्मिता की यह चेतना आधुनिक सामाजिक परिवर्तन का संकेत है। यहाँ विद्रोह हमेशा प्रत्यक्ष या आक्रामक रूप में नहीं आता। कभी–कभी अपने निर्णय पर कायम रहना, अन्याय को पहचानना, आत्मसम्मान को प्राथमिकता देना या मानसिक रूप से स्वतंत्र होना भी प्रतिरोध का रूप ग्रहण कर लेता है।

परंपरा और आधुनिकता का द्वंद्व

मंजुल भगत के कथा–साहित्य में स्त्री जीवन को समझने के लिए परंपरा और आधुनिकता के बीच के संबंध को देखना आवश्यक है। आधुनिक शिक्षा और बदलते सामाजिक परिवेश ने स्त्री को नए विकल्प दिए हैं, लेकिन पारंपरिक मूल्य अभी भी सामाजिक व्यवहार को प्रभावित करते हैं। स्त्री एक ओर परिवार और संस्कृति से जुड़े मूल्यों को महत्व देती है, दूसरी ओर वह अपने व्यक्तित्व और स्वतंत्रता को भी महत्त्वपूर्ण मानती है। इस स्थिति में उसके सामने अनेक प्रकार के निर्णयात्मक प्रश्न उपस्थित होते हैं। वह किस सीमा तक पारिवारिक अपेक्षाओं को स्वीकार करे? अपनी आकांक्षाओं को किस प्रकार व्यक्त करे? आर्थिक स्वतंत्रता और पारिवारिक दायित्व में संतुलन कैसे स्थापित करे? ऐसे प्रश्न आधुनिक स्त्री जीवन के सामाजिक यथार्थ को निर्मित करते हैं।

मंजुल भगत का कथा–साहित्य इन प्रश्नों का कोई एकरेखीय समाधान प्रस्तुत करने के बजाय स्त्री के अनुभवों के माध्यम से उन्हें सामने लाता है।

सामाजिक रूढ़ियाँ और स्त्री संघर्ष

समाज में लंबे समय से चली आ रही धारणाएँ स्त्री के जीवन को प्रभावित करती हैं। स्त्री के लिए निर्धारित आचरण, विवाह संबंधी अपेक्षाएँ, परिवार की प्रतिष्ठा, नैतिकता की सामाजिक कसौटियाँ और लिंग आधारित भूमिकाएँ उसके जीवन को नियंत्रित कर सकती हैं। मंजुल भगत के कथा–साहित्य में इन रूढ़ियों के कारण उत्पन्न तनाव को देखा जा सकता है। स्त्री जब निर्धारित सामाजिक भूमिका से अलग अपनी इच्छा या विचार व्यक्त करती है, तब उसे सामाजिक प्रतिक्रिया का सामना करना पड़ता है। इस प्रक्रिया में स्त्री के सामने बाहरी सामाजिक दबाव और आंतरिक संघर्ष दोनों उपस्थित होते हैं।

लेखिका की दृष्टि में स्त्री संघर्ष केवल पुरुष–विरोध तक सीमित नहीं है। परिवार, सामाजिक प्रतिष्ठा, आर्थिक व्यवस्था और सांस्कृतिक मान्यताएँ मिलकर उसके अनुभवों को प्रभावित करती हैं। इसलिए उनके कथा–साहित्य में स्त्री समस्या का सामाजिक आधार अधिक व्यापक दिखाई देता है।

स्त्री और मानवीय संवेदना

मंजुल भगत के कथा–साहित्य का एक उल्लेखनीय पक्ष उसकी मानवीय संवेदना है। स्त्री पात्रों की समस्याओं को केवल सामाजिक शोषण के उदाहरण के रूप में प्रस्तुत करने के बजाय उनके मानवीय अनुभवों को महत्त्व दिया गया है।

स्त्री दुखी है तो वह केवल 'पीड़िता' नहीं है, वह प्रेम करती है, निर्णय लेती है, आशा करती है, असफल होती है और परिस्थितियों से जूझती है। इस प्रकार उसका व्यक्तित्व अनेक स्तरों पर विकसित होता है। यही बहुआयामी प्रस्तुति सामाजिक यथार्थ को अधिक जीवंत बनाती है।

स्त्री जीवन के प्रति यह संवेदनशील दृष्टि पाठक को उसके अनुभवों के भीतर प्रवेश करने का अवसर देती है। परिणामतः कथा केवल किसी सामाजिक समस्या का दस्तावेज नहीं रह जाती, बल्कि मानवीय अनुभव का कलात्मक रूप बन जाती है।

मंजुल भगत की भाषा और शिल्प

मंजुल भगत के कथा–साहित्य में भाषा और शिल्प भी सामाजिक यथार्थ की अभिव्यक्ति में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सामान्य जीवन से जुड़े प्रसंगों को प्रस्तुत करने के लिए सहज और संप्रेषणीय भाषा का प्रयोग कथा को पाठक के निकट लाता है।

संवाद, पात्रों के व्यवहार, घरेलू परिस्थितियों और दैनिक जीवन की घटनाओं के माध्यम से सामाजिक वातावरण का निर्माण किया जाता है। पात्रों की भाषा उनके सामाजिक और पारिवारिक परिवेश की ओर संकेत करती है। इससे स्त्री जीवन की परिस्थितियाँ अधिक स्वाभाविक रूप में सामने आती हैं।

कथाकार की शिल्पगत विशेषता यह भी है कि सामाजिक प्रश्नों को प्रत्यक्ष उपदेश के रूप में प्रस्तुत करने के बजाय उन्हें पात्रों के जीवन में घटित घटनाओं के माध्यम से उभारा जाता है। इससे कथा में कलात्मकता और सामाजिक अर्थ दोनों बने रहते हैं।

स्त्री जीवन के संदर्भ में मंजुल भगत की कथा–दृष्टि

मंजुल भगत की कथा–दृष्टि में स्त्री जीवन का चित्रण सामाजिक संबंधों की व्यापक संरचना के भीतर होता है। स्त्री के सामने आने वाली समस्याएँ केवल व्यक्तिगत नहीं हैं। वे उन सामाजिक मूल्यों से जुड़ी हैं जो उसके व्यवहार और भूमिका को निर्धारित करते हैं।

उनके कथा–साहित्य में स्त्री की स्थिति के अनेक स्तर दिखाई देते हैं–परिवार में उसकी भूमिका, आर्थिक परिस्थिति, सामाजिक प्रतिष्ठा, भावनात्मक संसार, आत्मसम्मान, शिक्षा, आधुनिकता तथा बदलते संबंध। इन सभी पक्षों को एक साथ देखने पर स्त्री जीवन का अधिक व्यापक सामाजिक यथार्थ सामने आता है।

इस दृष्टि से मंजुल भगत का कथा–साहित्य स्त्री विमर्श को केवल अधिकारों की चर्चा तक सीमित नहीं करता, बल्कि दैनिक जीवन के अनुभवों से जोड़ता है। उनकी स्त्री पात्र सामाजिक संरचना के भीतर रहते हुए अपने अस्तित्व को समझने और उसे बनाए रखने का प्रयास करती हैं।[7]

निष्कर्ष

मंजुल भगत के कथा–साहित्य में स्त्री जीवन का चित्रण सामाजिक यथार्थ की व्यापक भूमि पर किया गया है। उनके स्त्री पात्र परिवार, अर्थव्यवस्था, सामाजिक मर्यादा, भावनात्मक संबंधों और व्यक्तिगत आकांक्षाओं के बीच जीवन व्यतीत करते हैं। उनके अनुभवों में भारतीय समाज के बदलते स्वरूप के साथ–साथ उन संरचनात्मक समस्याओं की झलक मिलती है जो स्त्री के जीवन को प्रभावित करती रही हैं।

मंजुल भगत की कथा–दृष्टि का महत्त्व इस बात में है कि वे स्त्री को केवल करुणा या संघर्ष के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत नहीं करतीं। उनकी स्त्री पात्रों में संवेदना, विवेक, आत्मसम्मान, आकांक्षा और परिस्थितियों से जूझने की क्षमता दिखाई देती है। इस कारण उनका स्त्री–चित्रण एकांगी न होकर बहुआयामी बनता है।

उनके कथा–साहित्य में परिवार स्त्री के जीवन का महत्त्वपूर्ण आधार है, लेकिन वही परिवार अनेक बार उसकी स्वतंत्रता की सीमाएँ भी निर्धारित करता है। आर्थिक स्थिति उसकी सामाजिक स्थिति को प्रभावित करती है और घरेलू तथा बाहरी श्रम के बीच संतुलन उसके जीवन को जटिल बनाता है। आधुनिक शिक्षा और बदलती सामाजिक चेतना उसे नए विकल्प प्रदान करती है, किंतु परंपरागत मूल्य उसके सामने निरंतर चुनौती उपस्थित करते हैं।

इस प्रकार मंजुल भगत का कथा–साहित्य स्त्री जीवन के व्यक्तिगत अनुभवों को व्यापक सामाजिक संरचना से जोड़कर देखता है। उनके यहाँ सामाजिक यथार्थ किसी बाहरी घटना का मात्र वर्णन नहीं, बल्कि मनुष्य के जीवन में उपस्थित संबंधों, असमानताओं, आकांक्षाओं और संघर्षों का जीवंत अनुभव है। स्त्री के माध्यम से उनका कथा–साहित्य भारतीय समाज के परिवर्तनशील स्वरूप को समझने की दिशा में महत्त्वपूर्ण आधार प्रस्तुत करता है।

संदर्भ सूची :

1. नामवर सिंह, कहानी : नई कहानी, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज।
2. मैनेजर पाण्डेय, साहित्य और इतिहास–दृष्टि, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. मंजुल भगत, अनारो, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
4. रामविलास शर्मा, साहित्य और समाज, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज।
5. प्रभा खेतान, उपनिवेश में स्त्री, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
6. उषा जैन, हिंदी उपन्यासों में नारी, साहित्य भवन, इलाहाबाद।
7. मंजुल भगत, लेडीज क्लब, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।